07 मार्च 2014

राष्ट्रवाद के साथ क्रिकेट का खेल

–अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

वर्ष 1999 था जब कारगिल युद्ध चल रहा था। इंगलैंड में विश्व कप क्रिकेट खेला जा रहा था। मैं संयोगवश गर्मियों की छुट्टियां बिताने के लिए अपने परिवार के साथ वहां गया हुआ था। हमें क्रिकेट मैच देखने के लिए एक स्टेडियम से दूसरे स्टेडियम जाना पड़ रहा था। भारतीय टीम सेमीफाइनल से पहले ही बाहर हो चुकी थी।

पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के साथ भारत का पहल मैच मैनचेस्टर में ओलड ट्रैफर्ड में खेला गया था। कारगिल युद्ध जारी रहने के साथ भारत–पाक क्रिकेट मैच का और भी महत्व हो गया था। स्टेडियम में तनाव था। अधिकतर दर्शक या तो भारतीय रंगों में आए थे अथवा उन्होंने पाकिस्तानी टी–शर्ट पहनी हुई थी। दोनों देशों के राष्ट्रीय ध्वज हजारों की संख्या में लहराए जा रहे थे। भारतीय मूल के कुछ युवाओं ने मुझे पहचान लिया और हम भारतीय टीम की विजय की संभावना के बारे में बातचीत करने लगे। अधिकतर ने मुझे बताया कि उनके पास ब्रिटिश पासपोर्ट है और वह ब्रिटिश नागरिक हैं। इनमें से कुछ गुजराती थे जिनके परिवार उगांडा और केन्या से आ गए थे। मैंने उनसे सवाल किया कि क्रिकेट मैच में वे किसे प्रोत्साहित करेंगे। एक स्वर में उन्होंने कहा, 'निश्चित तौर पर भारत के लिए'। लेकिन अगर इंगलैंड किसी और देश के साथ खेल रहा होता तो हम उसे प्रोत्साहित करते। मुझे लॉर्ड स्वराज पॉल की बात याद आई कि वे हमेशा भारत को प्रोत्साहित करते हैं और अगर इंगलैंड और भारत खेलते हैं तो उन्हें विजेता पक्ष की ओर रहने का विशेष लाभ मिल जाता है।

मैंने ऊपर इन बातों का जिक्र इसलिए किया क्योंकि राष्ट्रवाद के साथ खेल या राष्ट्रवाद के साथ क्रिकेट का खेल किसी भी व्यक्ति की राष्ट्रीय पहचान का एक पहलू होता है। खेल प्रेमी होने के नाते कोई भी एक महान खिलाड़ी के गुणों की प्रशंसा कर सकता है चाहे उसकी नागरिकता कोई भी हो। उनमें से कुछ आनन्द ले रहे होते हैं। लेकिन प्रतिस्पर्धात्मक क्रिकेट में राष्ट्रवाद की भावना आपको आपकी राष्ट्रीय टीम की तरफ खींचती है। मैंने विश्व कप फुटबाल में दुनिया भर के प्रशंसकों को अपनी राष्ट्रीय टीम का उत्साह बढ़ाते देखा है।

भारत–पाकिस्तान क्रिकेट के संदर्भ में महान क्रिकेटर के खेल संबंधी गुणों की प्रशंसा करना गलत नहीं है चाहे उनकी राष्ट्रीय सीमाएं कुछ भी हों। लेकिन जब कुछ लोगों का कोई पहचाना हुआ गुट सोचे समझे तरीके से पाकिस्तान जीत का जश्न मनाता है, तब इसे पाकिस्तान के खेल संबंधी गुणों की सराहना का कोई मासूम तरीका नहीं माना जा सकता। इस तरह की कार्रवाई में कोई अंतर्निहित राजनैतिक बयान होता है। मुद्दा यह नहीं है कि इस तरह के युवाओं के खिलाफ क्या आपराधिक कार्रवाई की जा सकती है या नहीं और अगर की जा सकती है तो कानून की कौनसी धारा के अंतर्गत। मुद्दा यह है कि जान–बूझकर इस तरह का भाव प्रदर्शन क्या राजनैतिक संदेश देने के लिए किया गया।

जहिर है कि इस तरह के भाव प्रदर्शन ने बहुत से लोगों के दिमाग में संदेह पैदा किया है। इसने एक मनोवैज्ञानिक बाधा खड़ी की है जहां कुछ लोग अनावश्यक उत्तेजित होंगे। क्या उन्हें इस बात का अहसास हुआ होगा कि वे अपने ही समुदाय के लाखों सदाशयी लोगों को किस हद तक नुकसान पहुंचाएंगे जो हो सकता है कि अपने अनुभव को न बांटें। यह दलील कि इससे एक खास वर्ग के लोगों में मनमुटाव की भावना दिखाई देती है उससे मैं सहमत नहीं हूं। इसके विपरीत यह उन्हें राष्ट्रीय मुख्यधारा से दूर करता है। सभी सदाशयी भारतीय और खासतौर से समुदाय के सदस्यों को ऐसे गुमराह युवकों को समझाना चाहिए कि जो कुछ उन्होंने किया उससे उन्होंने खुद को, अपने समुदाय और देश को चोट पहुंचाई है। यह हारा हुआ खेल है।